

# डॉ. डोनाल्ड फाउलर, पुराने नियम की पृष्ठभूमि, व्याख्यान 5, बुतपरस्ती का धार्मिक दर्शन

© 2024 डॉन फाउलर और टेड हिल्डेब्रांट

यह पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर अपने शिक्षण में डॉ. डॉन फाउलर हैं। यह सत्र 5 है, बुतपरस्ती का धार्मिक दर्शन।

खैर, एक बार फिर से आपका स्वागत है। हम इस बिंदु तक केंद्रीकरण की घटना के विकास का पता लगा रहे हैं, और इसलिए हम सर्गोन से आगे बढ़ गए हैं, जिन्होंने वास्तव में कभी भी दिव्यकरण का दावा नहीं किया लेकिन जिन्होंने वास्तव में केंद्रीकरण की पूरी अवधारणा को नाटकीय रूप से कुछ नया बना दिया। और हमने उसे ऐसा करते हुए देखा, और फिर हमने नारम-सिन को देखा, जो उसके बाद दो वंशज थे, हमने उसे पूर्ण विकसित आत्म-दिव्यकरण में संलग्न देखा। तो, हम लगभग वहीं पहुंच गए हैं जहां हम जाने वाले हैं, जो आपको शाही दैवीकरण की इस घटना के माध्यम से समझाएगा कि हम बुतपरस्ती की मूल अवधारणाओं को कैसे समझ सकते हैं।

हमारी दुनिया में बुतपरस्ती नहीं, उनकी दुनिया में बुतपरस्ती। और इसलिए, यह हमारे समय की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक है क्योंकि जब आप पुराने नियम के पन्ने पढ़ते हैं, तो इज़राइली वास्तव में आकर्षित होते थे; जाहिर तौर पर, कनानी मॉडल द्वारा उन्हें शक्तिशाली तरीकों से प्रलोभित किया गया था। और मुझे लगता है कि हमें अपनी बाइबिल को समझने के लिए यह समझने की आवश्यकता है कि वह मॉडल क्या है, और फिर उस मॉडल को समझने से, हम यह समझने की स्थिति में हैं कि आज बुतपरस्ती हमें कैसे लुभा सकती है, इस तथ्य को देखते हुए कि हम ऐसे दिखते हैं जैसे हम पूरी तरह से हैं विभिन्न विश्व सेटिंग्स।

इसलिए, मुझे लगता है कि यह वास्तव में महत्वपूर्ण है, और मुझे पता है कि आपको मेरे साथ इस सामग्री को पढ़ने के लिए कहने में काफी समय लगेगा, लेकिन मुझे लगता है कि यह मददगार होगा क्योंकि हम इस मॉडल को आत्मसात करने की कोशिश करेंगे। और मैं जोड़ सकता हूँ, मुझे लगता है कि यह युगांतशास्त्रीय रूप से समझने के लिए एक मॉडल भी है, जब हम अंतिम युग के बारे में सोचते हैं तो क्षितिज पर क्या हो सकता है। और इसलिए, हम वहीं जा रहे हैं।

इस काल के अंतिम राजा, सागोनिनिक काल को पुराना अक्काडियन काल कहा जाता है। और उस काल का अंतिम राजा शर-काली-शरी है। शर-काली-शरी, विश्वास करें या न करें, रहस्योद्घाटन की पुस्तक में उल्लेख किया गया है।

अच्छा, ठीक है, तो मैं दिखावटी हो रहा हूँ। रहस्योद्घाटन की पुस्तक में शर-काली-शरी का उल्लेख व्यक्ति के रूप में नहीं किया गया है, लेकिन शर-काली-शरी के नाम का अर्थ है सभी राजाओं का राजा। और हमने पहले शाही उपाधियों के बारे में बात की थी।

सभी राजाओं का राजा एक शाही उपाधि है जिसका उपयोग रहस्योद्घाटन की पुस्तक में ईसा मसीह के लिए किया गया है। तो, यह एक शाही उपाधि है। यहाँ, यह एक राजा का व्यक्तिगत नाम है।

उन्होंने 25 अप्रभावी वर्षों तक शासन किया। उसके दैवीकरण का प्रमाण नाराम-सिन की तुलना में बहुत कम है। उसके साम्राज्य का धीरे-धीरे विघटन हो रहा है।

ऐसा प्रतीत होता है कि वह गुटी नामक लोगों के एक समूह की घुसपैठ से कमजोर हो गया है। एलाम के बाद, जो दक्षिणी ईरान में है, इराक में नहीं, ईरान ने अपनी स्वतंत्रता हासिल की, और तेजी से विघटन हुआ क्योंकि शहरों ने अपनी स्वतंत्रता का दावा किया। उनकी हत्या से अब मेसोपोटामिया में अराजकता फैल गई है।

यह एक ऐसा प्रतिमान है जो प्राचीन निकट पूर्व में साम्राज्यों की पूरी घटना के दौरान खुद को दोहराएगा। हमारा मतलब यह है. मैं केंद्रीकरण शब्द का प्रयोग करता रहता हूँ।

केंद्रीकरण से मैं किसी व्यक्ति में शक्ति के केंद्रीकरण की बात कर रहा हूँ। जब आप पूरी तरह से केंद्रीकृत हो जाते हैं तो क्या होता है, ये साम्राज्य अचानक ढह जाते हैं। शार-काली-शरी के शासनकाल में यही होता है।

चूँकि यह उनमें केन्द्रीकृत है, यदि उनका नेतृत्व अप्रभावी हो जाता है, तो किसी और चीज़ के लिए कोई आकर्षण नहीं है। यह तो बस पतन है. असीरियन साम्राज्य शीघ्र ही ढह गया।

पुराना बेबीलोन साम्राज्य शीघ्र ही ढह गया। फ़ारसी साम्राज्य शीघ्र ही ढह गया। यूनानी साम्राज्य इसका अपवाद होगा। हालाँकि जब सिकंदर महान की मृत्यु हुई तो यह शीघ्र ही ढह गया, साम्राज्य विभाजित हो गया।

लेकिन यह एक ऐसी घटना है जिसे हम अति-केंद्रीकरण कहते हैं। तो, ठीक इसी तरह, इस अत्यधिक केंद्रीकृत साम्राज्य का अचानक और नाटकीय अंत हो जाता है। अब, हम यहां थोड़ी जल्दी करने जा रहे हैं।

पुराने अक्कादियन और उर III काल के बीच की अवधि। यह बीच की एक समयावधि है, और यह कई सौ वर्षों तक चलती है। महान सुमेरियन शहर, लगश, अपने शिखर पर पहुँच गया है।

इसने सुमेरियन नेतृत्व में दक्षिण में एक साम्राज्य का निर्माण किया। हालाँकि, हम बीच में उस अवधि के बारे में बात नहीं करने जा रहे हैं, भले ही अगर हमारे पास ऐसा करने का समय होता, तो मुझे लगता है कि मैं आपके लिए कुछ दिलचस्प टिप्पणियाँ कर सकता हूँ। लेकिन इसके बजाय, हम उर III अवधि के बारे में बात करने जा रहे हैं।

तो, यह उर III अवधि लगभग सौ वर्षों तक चली, यह इस पर निर्भर करता है कि आप किस कालक्रम का अनुसरण कर रहे हैं, 2150 से 2050, या 2100 से 2000 तक। लेकिन यह लगभग सौ वर्ष है। इसे उर III काल कहा जाता है क्योंकि सुमेरियन राजा सूची में सूचीबद्ध राजाओं को

उर के तीसरे राजवंश के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, और इसीलिए इसे उर III काल कहा जाता है।

इसे सुमेरियन पुनर्जागरण या सुमेरियन सभ्यता के भारतीय ग्रीष्मकाल के रूप में भी जाना जाता है। अब, मुझे नहीं पता कि आप जानते हैं या नहीं, लेकिन मैं मिडवेस्ट से आया हूँ और वहाँ हमने इंडियन समर के बारे में बात की। भारतीय ग्रीष्म ऋतु पतझड़ की एक घटना थी जब सर्दी शुरू होने से पहले आपको गर्मियों की आखिरी यात्रा का मौका मिलता था।

और निस्संदेह, वहाँ रहने वाले लोगों ने इसे पहचान लिया क्योंकि यह देर से आया था और वे जानते थे कि यह लंबे समय तक नहीं टिकेगा, लेकिन यह अद्भुत था। खैर, सुमेरियन कहे जाने वाले इन उल्लेखनीय लोगों के लिए भारतीय ग्रीष्म ऋतु का मतलब सर्दी लगभग यहाँ है। और इसलिए, इसका मतलब यह है कि जब यह अवधि पूरी हो जाएगी, तो सुमेर का अंत आ गया है।

इन महान लोगों ने वस्तुतः उन अधिकांश चीजों का आविष्कार किया, जिन्होंने सभ्यता को महान बनाया, और फिर भी वे अब जल्दी से समाप्त होने जा रहे हैं, और सेमाइट विजयी होंगे। तो, इसे ध्यान में रखते हुए, हम इस राजवंश के संस्थापक को देख सकते हैं। उसका नाम उर-नम्मू था।

वह इसके संस्थापक थे और अपनी कानून संहिता के लिए सबसे प्रसिद्ध थे। अब, यह पहली कानून संहिता नहीं है, बल्कि यह एक कानून संहिता है, और कानूनों के बारे में हम बाद में भी बात करेंगे। हमारे पास उसके जिगगुराट की एक तस्वीर है, और जैसा कि आप देख सकते हैं, जिगगुराट वास्तव में काफी बड़ा और खूबसूरती से बनाया गया था।

मैं आपको बता सकता हूँ कि आप सोचते हैं कि जिगगुराट का मंदिर वाला हिस्सा सबसे ऊपर होगा, लेकिन ऐसा नहीं था। मंदिर वास्तव में नीचे था, और इसलिए संरचना के इतने ऊंचे होने का कारण धार्मिक रूप से था, और ध्यान रखें, जिस तरह से उन्होंने सोचा था कि देवता वहाँ ऊपर हैं, और हम यहाँ नीचे हैं, और जिस तरह से ये दोनों जुड़ते हैं एक पुल के माध्यम से है। क्या आपको बैबेल की प्रसिद्ध मीनार याद है? यह स्वर्ग तक पहुँचने के लिए कोई मीनार नहीं थी।

यह स्वर्ग को पृथ्वी से जोड़ने के लिए एक मीनार थी ताकि एक संबंध बना रहे। क्या आपको याद है जब उत्पत्ति की किताब में याकूब ने सपना देखा था, और उसने स्वर्गदूतों को सीढ़ी पर चढ़ते और उतरते देखा था? मुझे नहीं पता कि आपने कभी इसके बारे में सोचा है या नहीं, लेकिन सीढ़ियों पर कई लोग चढ़ते और उतरते नहीं हैं। हम जानते हैं कि सीढ़ी का अभी तक आविष्कार भी नहीं हुआ था, और हम जानते हैं कि यह सीढ़ी नहीं थी।

यह एक रैंप था, और जिगगुराट में आपके पास यही है। यदि आप ध्यान से देखें, तो आप कई रैंप देख सकते हैं, जो देवता को रैंप से नीचे आने और नीचे मंदिर में प्रवेश करने का अवसर प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, जहाँ भगवान द्वारा या भगवान के लिए एक कमरा रखा गया था। बैठक स्थल वास्तव में सबसे ऊपर था, लेकिन शीर्ष का उद्देश्य देवता को नीचे आकर मंदिर में प्रवेश करने में सक्षम बनाना था।

यह उर-नामु का एक सुंदर जिगगुराट है, और उर-नामु ने इस नए राजवंश की स्थापना की, लेकिन उर-नामु के साथ कुछ अशुभ घटित होता है जिसके बारे में मुझे आपको बताना होगा, जिसके गंभीर निहितार्थ हैं। वह युद्ध में मारा गया है। अब याद रखें, जिस तरह से... ठीक है, निश्चित रूप से, आपको याद नहीं होगा क्योंकि मैंने आपको इसके बारे में अभी तक नहीं सिखाया है, लेकिन प्राचीन दुनिया में, बुरे काम करने वाले लोगों के साथ बुरा होता था।

उन लोगों के साथ अच्छी चीज़ें हुईं जो यह पता लगा सकते थे कि देवता क्या अच्छा चाहते थे। यह एक कारण-प्रभाव वाली बात थी और मैं इस बारे में विस्तार से बात करूंगा। इसलिए जब उर-नामु युद्ध में मर जाता है, तो इसका अर्थ यह निकाला जाता है कि उसने देवताओं को नाराज किया होगा।

यह विशेष रूप से सच होगा क्योंकि पुराने अक्कादियन काल के अंतिम राजा, आपको याद होगा, शर-काली-शैरी की मृत्यु हो गई थी और वह भी युद्ध में मारा गया था। पुराने नियम में, युद्ध में बहुत कम राजा मारे जाते हैं। राजाओं ने युद्ध में मारे जाने से बचने के लिए हर संभव प्रयास किया क्योंकि इसके धार्मिक निहितार्थ आत्म-निंदनीय थे।

इसलिए, राजा खतरे से बाहर रहेंगे क्योंकि युद्ध हारना युद्ध हारना है। इसलिए, उन्होंने स्वयं राजवंश की स्थापना की, लेकिन उनके पुत्र शुल्गी को प्रमुखता प्राप्त है। उन्होंने 48 वर्षों तक शासन किया और यह पूर्ण राजशाही का काल था, जिसका सर्वोच्च उदाहरण शुल्गी था।

यह बहुत केंद्रीकृत है। उर-तीन सुमेरियन सभ्यता अब इतनी केंद्रीकृत है कि कोई निजी भूमि नहीं है। राजा हर चीज़ का मालिक है।

सत्ता के इस निरंतर तीव्र होते केंद्रीकरण के बारे में मेरा यही मतलब है। तो, राजा सारी भूमि का मालिक है। वह एक पूर्ण सम्राट है, और राज्य अत्यधिक केंद्रीकृत है।

संक्षेप में, जब आप यह सब देखते हैं, तो यह आपको बताता है कि शुल्गी सुमेरियों की संस्कृति को प्रतिबिंबित नहीं करता है। इस प्रकार के व्यवहार में सरगोन की संस्कृति की विजय हुई है। राजा में सत्ता का केंद्रीकरण और सारी भूमि पर राज्य का स्वामित्व सरगोन महान की विजय है।

तो, उनके शासनकाल की दिलचस्प विशेषताओं में से एक आत्म-दिव्यीकरण पर उनका अभूतपूर्व जोर है। अब, मैं अपने पांच बिंदुओं पर जा रहा हूँ, लेकिन मैं आपको बता दूँ कि हम कहां जा रहे हैं। हम अंततः क्लास नोट्स के इस अनुभाग की ओर बढ़ रहे हैं।

हम राजाओं के दैवीकरण की व्याख्या कैसे कर सकते हैं? यह वहां क्यों था? आपको यह सचमुच दिलचस्प लगेगा। लेकिन जब तक हम वहां नहीं पहुंच जाते, हम उसके राजा के सबूत के बारे में बात करना चाहते हैं। मेसोपोटामिया में कोई भी राजा इस राजा के समान दिव्य नहीं था।

अब, यदि आप इतिहास को खराब तरीके से पढ़ते हैं, तो यह एक इतिहास का प्रश्न है जो आप पूछ सकते हैं। अच्छे इतिहास के प्रश्न इस मुद्दे का समाधान करते हैं कि वह इतना आत्म-दिव्य क्यों था? इतिहास के अच्छे प्रश्न पूछते हैं, इसका उद्देश्य क्या था? ठीक है? इसलिए, मैं आपके

लिए उसके दिव्यकरण के साक्ष्य सूचीबद्ध कर रहा हूँ, लेकिन वे हमें यह नहीं समझाते कि क्या हो रहा था, और मैं आपके लिए वह करूँगा। मुझे लगता है कि इस राजा ने अब तक के सभी राजाओं की तुलना में अपने नाम के आगे दैवीय निर्धारक का प्रयोग सबसे अधिक किया।

उन्होंने पूरी दुनिया को यह स्पष्ट कर दिया कि वह देवता हैं। तो, जो चीजें आप देखते हैं उनमें से एक यह है कि आप उसका नाम कभी नहीं देखते हैं, या यदि आप देखते हैं, तो मुझे नहीं पता कि ग्रंथ कहां हैं, आप उसके नाम के सामने दैवीय निर्धारक के बिना उसका नाम कभी नहीं देखते हैं। दूसरे, शाही भजनशास्त्र से उनके देवत्व का पता चलता है।

ठीक है, ठीक है, यह बहुत कुछ नहीं कहता है, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि मुझे उम्मीद है कि जब मैं इसे समझाऊंगा तो आप सुनेंगे। मैं समझता हूँ कि आज की दुनिया में, हम व्याख्यान सुनने के आदी नहीं हैं, और निश्चित रूप से, जब हम इस तरह पढ़ा रहे हैं, तो यह एक तरह का संवाद है क्योंकि मुझे आपके सवालों से निपटने का मौका नहीं मिलता है, लेकिन मैं विद्यार्थियों को पूरा विचार बताए बिना सामान्य विचार देने के लिए चीजों को मेरी कक्षा के नोट्स में गुप्त रूप से रखें। राजसी स्तोत्र विद्या से हमारा अभिप्राय यह है।

शुल्गी ने अपनी ओर से महिला देवी ईशर के लिए साहित्य का एक समूह लिखा है। वह अपने सुमेरियन नाम, इन्नाना से जानी जाती है, और यह अत्यधिक कामुक साहित्य है। यह पहला है। ऐसा नहीं है कि इस बिंदु तक किंग्स और इनान्ना के बीच कुछ कामुक चीजें नहीं चल रही थीं, लेकिन उसके पास दस्तावेजों की एक पूरी लाइब्रेरी है जो ईशर के साथ उसके यौन संबंधों का जश्न मनाते हुए लिखी गई है।

अत्यधिक कामुक प्रेम. मुझे अक्सर आश्चर्य होता है, मैं आपको उत्तर देने के लिए तैयार नहीं हूँ, मुझे अक्सर आश्चर्य होता है कि क्या बाइबल में सोलोमन के गीत का इससे कोई लेना-देना है क्योंकि भले ही यह अत्यधिक कामुक नहीं है, यह निश्चित रूप से स्पष्ट रूप से यौन है. और इसलिए, मुझे आश्चर्य हुआ है, लेकिन मेरे पास इसका उत्तर देने की विशेषज्ञता नहीं है।

तीसरा, वह अपनी प्रतिमा पर नियमित रूप से प्रसाद चढ़ाते हैं। यह पहला है। ठीक है, मैं तुम्हें समझाता हूँ कि तुम्हारा मतलब क्या है।

तो, आपने जिगगुराट देखा। मैंने आपको बताया था कि असली मंदिर खंड सबसे नीचे था। वहां, देवता की एक मूर्ति रखी गई थी, और फिर, उनके धर्मशास्त्र के अनुसार, देवता नीचे आते थे, मूर्ति में निवास करते थे।

नीचे आने और मूर्ति में रहने की उस स्थिति में, मूर्ति जादुई रूप से काम करेगी, क्योंकि जादू इसका एक बड़ा हिस्सा था, मूर्ति जादुई रूप से उस भोजन को खा लेगी जो उसे अर्पित किया गया था, और पूजा करने वाला भगवान को प्रसन्न करेगा। खैर, दिलचस्प बात यह है कि शुल्गी की अपनी मूर्ति वहां रखी गई है, और फिर उसकी पूजा इस तरह की जाती है जैसे वह भगवान हो। वास्तव में, शुल्गी की इस प्रतिमा को विभिन्न शहरों में नदी के ऊपर या नीचे भेजा जा सकता था, और वहां प्रतिमा की पूजा की जाती थी।

और वास्तव में, वह, सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, एक ईश्वरीय अवतार था। चौथा, उनकी मृत्यु के बाद उन्हें कैलेंडर का सितारा घोषित कर दिया गया। अब इसका बिल्कुल कोई मतलब नहीं है।

तो आइए मैं आपको समझाऊं कि इससे मेरा क्या मतलब है। याद रखें, हमने थोड़ा पहले उल्लेख किया था कि प्राचीन दुनिया में, वे सोचते थे कि सितारे देवता थे। यदि आपने कभी... तारों से जगमगाती रात को किसने नहीं देखा है? ऐसा लगता है जैसे तारे टिमटिमा रहे हों जैसे कि वे एनिमेटेड हों।

उन्होंने इसे इस बात का प्रमाण समझा कि तारे जीवित थे। और फिर, जब आप याद करते हैं कि तारे इस बात पर निर्भर करते हैं कि हम किस मौसम में हैं, तो ऐसा लगता है कि तारे ने क्षितिज के पार एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा की है। तो, आपको याद है जब मैंने सुमेरियन राजा सूची, राजत्व के लिए प्रचार में आपको बताया था कि देवताओं ने ईश्वर के उपहार के रूप में स्वर्ग से राजत्व को कम कर दिया था।

शुल्गी जो कर रहा है वह प्रक्रिया को उलट रहा है, क्योंकि जब वह मर जाता है, और यह राजाओं के दैवीकरण के बारे में चीजों में से एक है, तो यह मरहम में लौकिक मक्खी थी। चूंकि सभी राजा मर जाते हैं, आप इस तथ्य को कैसे समझाएंगे कि वह मर गया क्योंकि वह एक देवता है? और जिस तरह से उन्होंने इसे समझाया, शुल्गी शायद जिगगुराट के रैंप पर चढ़ गया, स्वर्ग में रैंप पर जहां उसने सितारों में से एक के रूप में अपना स्थान ले लिया और अब केवल एक सांसारिक प्राणी के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वर्गीय प्राणी के रूप में हमेशा के लिए अमर हो गया। पाँचवाँ, उसकी शाही उपाधियाँ देवताओं के समान हैं, और उसका नाम अन्य लोगों द्वारा इस प्रकार उपयोग किया जाता है मानो वह कोई देवता हो।

यह समझाने की कोशिश करने के लिए कि इससे हमारा क्या मतलब है, मेरा इससे क्या मतलब है, हमने पहले बात की थी कि कैसे सभी देवताओं के पास शाही उपाधियाँ होती हैं। वास्तव में, यह वास्तव में आकर्षक है। यह उन चीजों में से एक है जो मैं चाहता हूँ कि मैंने अपने जीवन में किया होता।

मेरे पास इसे करने का समय नहीं था। लेकिन मेसोपोटामिया के देवताओं की शाही उपाधियों की तुलना करना और यह देखना बहुत दिलचस्प होगा कि उनमें से कितने वास्तव में इज़राइल के भगवान के लिए उपयोग किए जाते हैं क्योंकि वे सभी शाही उपाधियाँ हैं। लेकिन उनके बारे में दिलचस्प बात यह है कि वह अपना नाम ऐसे रखते थे जैसे कि वह कोई भगवान हों।

मुझे समझाने दीजिए. जब मैं इंडियाना में रहता था, तो बैंक के साथ मेरा रिश्ता असामान्य था। मैं हमेशा किताबों पर जितना मेरे पास था उससे अधिक पैसा खर्च करना चाहता था।

और मेरी पत्नी आपको बता सकती है कि जब हमारी शादी हुई, तो हम इस बात पर सहमत हुए कि उसके पास चेकबुक होगी क्योंकि अन्यथा, जैसा कि उसने कहा, हमारे पास सभी किताबें होतीं और कोई घर नहीं होता। इसलिए, मैंने फर्स्ट नेशनल बैंक ऑफ वॉरसॉ, इंडियाना में बहुत

बड़ी रकम खर्च की। खैर, मैंने इतना पैसा खर्च किया कि जिस आदमी से मेरी दोस्ती हुई उसने पूरी प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने का फैसला किया।

और इसलिए, मैं जो करूंगा वह यह है कि मैं सचमुच उसे फोन पर कॉल करूंगा, और मैं कहूंगा, जो, वास्तव में, उसकी पोती मेरी बेटी के दोस्तों में से एक थी, और मैंने कहा, जो, मुझे इसके लिए कुछ पैसे चाहिए पुस्तकें। और वह मुझसे बस यही कहता, तुम्हें कितना चाहिए? और मैं उससे कहूंगा, ठीक है, मुझे \$500 की आवश्यकता है। और वह कहता था, ठीक है, मैं डेस्क पर बैठे-बैठे चेक ले लूंगा।

आपको बस आकर इसे लेना है। मैंने उसे कभी नहीं देखा, कभी देखा नहीं और मैंने अपने जीवन में भुगतान में कभी देरी नहीं की।

हमारे बीच बहुत अच्छे संबंध थे। हालाँकि, भले ही उन्होंने मुझ पर पूरा भरोसा किया, फिर भी उन्होंने हमेशा मुझसे कुछ न कुछ करवाया। उसने मुझसे मेरे नाम पर हस्ताक्षर करवाए।

इसी ने इसे कानूनी बना दिया। मैं वस्तुतः अपने नाम पर हस्ताक्षर किए बिना चेक प्राप्त नहीं कर सकता था। खैर, प्राचीन दुनिया में, जब आप कोई व्यापारिक लेन-देन कर रहे होते थे, तो वे अपने नाम पर हस्ताक्षर नहीं करते थे।

उन्होंने जो किया वह यह था कि वे एक भगवान के नाम पर शपथ लेंगे, और यह उतना ही पवित्र था जितना कि यह कहा जाता है क्योंकि यदि आप शपथ तोड़ते हैं, तो आप भगवान को नाराज कर सकते हैं, और फिर भगवान आपकी जान ले सकते हैं। वह हमेशा एक देवता के नाम पर अनुबंधित चीज़ थी। शुल्गी का नाम उन अनुबंधों में इस तरह इस्तेमाल किया गया था जैसे कि वह कोई भगवान हो।

यह निश्चित रूप से ऐसा लगता है कि शुल्गी उस स्तर पर दैवीकरण का दावा कर रहा था जो पूरी तरह से नहीं है, इस बिंदु तक ऐसा कुछ भी नहीं है। एक मिनट में, हम इस बारे में सवालों के जवाब देंगे और फिर इसे इस दिन यहां होने वाले अंतिम व्याख्यान के लिए एक स्प्रिंगबोर्ड के रूप में उपयोग करेंगे। अर्थात् इस सबके पीछे धर्मशास्त्र क्या है? इससे पहले कि हम ऐसा करें, मैं आपसे पवित्र विवाह के बारे में संक्षेप में बात करना चाहता हूँ।

यह कैलेंडर की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी, कम से कम चौथी और तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में। प्राचीन सुमेर में, एक देवी ने सुमेर के इतिहास में महत्व प्राप्त किया। उसका नाम इन्ना था।

आप शायद उसे इश्तार के नाम से बेहतर जानते होंगे। वह अन्य महिला देवियों, जैसे शुक्र ग्रह, मेसोपोटामिया में इश्तार और कनान में एस्टर्ट के साथ पहचान रखती थी। यह देवी मिथकों में एक बहन, बेटी, प्रेमिका, दुल्हन और विधवा के रूप में प्रकट हुई लेकिन कभी माँ या पत्नी के रूप में नहीं।

अब, यह दिलचस्प है, लेकिन हम निश्चित नहीं हैं कि क्यों। वह उरुक शहर, उरुक की नामधारी देवी थी, जिसका शासक अंतिम पुजारी था, जो गिपर में रहता था, जो इनात्रा के मंदिर का एक

खंड था, जहां वह संभवतः उसके पति के रूप में सेवा करता था। अंत, जो गवर्नर के लिए सुमेरियन शब्द है, को किसी उत्कृष्ट कार्य या उपलब्धि के कारण चुना गया था।

बाद में, निप्पुर में उरुक का धार्मिक नेतृत्व बदल गया, जिस पर तूफान देवता एनिल का शासन था। जब सरगोन ने सुमेर पर विजय प्राप्त की, तो उसने एनिल को अपने राजवंश के संरक्षक देवता इनान्ना को खड़ा करने का आदेश दिया। सरगोन ने इश्तार को प्रमुखता से ऊपर उठाया।

इस घटना ने बाद में होने वाले पवित्र विवाह का मार्ग प्रशस्त किया, वह घटना जब वर्ष के अंत में राजा और देवी के अनुष्ठान विवाह के माध्यम से जीवन का नवीनीकरण हुआ। वह ईशर की पुजारिन होगी। इस शारीरिक मिलन का सबसे पहला प्रमाण उरुक काल के दौरान था जब राजा ने इनान्ना के पति डुमुजिद की भूमिका निभाई और उरुक में इनान्ना के मंदिर में पवित्र विवाह संपन्न कराया गया।

इससे प्राचीन सुमेर में मंदिर से महल और महिला से पुरुष की ओर राजनीतिक वास्तविकताओं में बदलाव का पता चलता है। इन्ना वह साधन बन गई जिसके द्वारा उरुक के राजा सुमेर पर उसके चुने हुए पति के रूप में शासन करने का दावा करते हैं। वह राजा की पत्नी बन जाती है, जो सत्ता में महिला से पुरुष, यानी देवता से मानव शाही शक्ति में राजनीतिक बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है।

इस भूमिका के दिव्यकरण के साथ एक और विवरण प्रतीत होता है। इन्ना की पत्नी के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए, उसे युद्ध के मैदान में सफलतापूर्वक प्रदर्शन करना होगा। वहां उसकी जीत उसे इनान्ना के लिए वांछनीय बनाती है, जो मूल रूप से युद्ध की देवी है।

उरुकी तक धर्म में बदलाव का मतलब है कि सत्ता राजा के पास चली गई, जैसा कि राजा और इन्ना के शारीरिक मिलन में दर्शाया गया है। मैं यह सब आपकी बात समझाने के लिए कह रहा हूँ। अब इस अत्यधिक केंद्रीकृत दुनिया में, इन्ना की उच्च पुजारिन के साथ राजा का यौन संबंध पूरे राज्य में प्रजनन क्षमता लाने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

ऐसा करने के लिए वे इस शारीरिक मिलन पर भरोसा कर सकते थे क्योंकि राजा ने एक महत्वपूर्ण लड़ाई जीतकर अपने यौन साथी के रूप में इनान्ना के प्यार को प्रदर्शित किया था। मैं चाहूंगा कि वह आपके लिए थोड़ा सा सेट हो, क्योंकि मैंने वहां बहुत कुछ कहा है। यह एक अत्यधिक केन्द्रीकृत संस्कृति थी।

इस केंद्रीकृत संस्कृति में, राजा सालाना होने वाले यौन संबंध से अपनी पूरी भूमि में उर्वरता ला सकता था। लेकिन साल-दर-साल क्रम में आने के लिए, राजा को एक बड़ी लड़ाई जीतनी होगी। के साथ बिल्कुल वैसा ही हुआ ।

अक्कड़ शहर को आक्रमण से बचाया गया। शुली के साथ बिल्कुल ऐसा ही हुआ । उनके 48 साल के शासन के पहले 20 साल युद्ध में बीते।

तो, यह हमें बता रहा है कि यह यौन मिलन धार्मिक बन गया था... हमारी संस्कृति में सेक्स और धर्मशास्त्र के बारे में सोचना हमारे लिए बहुत अजीब है, लेकिन यह यौन मिलन कैलेंडर वर्ष की धार्मिक रूप से स्मारकीय घटना थी। हमारा मानना है कि इसकी शुरुआत बहुत पहले हुई थी, लेकिन अब इसमें राजा का स्थान उरुक काल में केंद्रीकृत हो गया था। तो फिर हम इसे कैसे समझें? और यहां मैं इस बात के मूल में जाना चाहूंगा कि हम पूर्वजों के सोचने के तरीके को कैसे समझते हैं, हम कैसे समझते हैं कि यह दोनों मौलिक रूप से भिन्न है लेकिन जिस तरह से हम आज सोच सकते हैं उसके लगभग समान है।

इसे कैसे समझाया जाए? इस गहन केंद्रीकृत संस्कृति में, धर्म अब राजा के व्यक्तित्व में केंद्रीकृत हो गया था। लेकिन वह क्या हासिल करने के लिए बनाया गया था? मैं अपने छात्रों से कहता हूँ कि प्राचीन दुनिया में धर्म, हमारी दुनिया के धर्म के विपरीत, कार्यात्मक था। जब पेग और मैं चर्च जाते हैं, तो कई बार हम जिस चीज की तलाश में होते हैं वह आशीर्वाद होता है।

हमारी सोच में जो अनुवाद होता है वह आध्यात्मिक उन्नति का क्षण है। हम ईश्वर की उस अनुभूति की तलाश में हैं जो हमें विश्वास दिलाए कि ईश्वर हमारे साथ मौजूद है। यह गहन सौंदर्यपरक है।

यह संभवतः आंशिक रूप से हमारे यूरोपीय मूल की ओर जाता है। यूरोप में, इन गिरिजाघरों को सौंदर्य की उत्कृष्ट कृतियों के रूप में बनाया गया था। समसामयिक विशेषण का प्रयोग करें तो उनका परमाणु प्रभाव था।

आप अंदर चले गए और आप अपने गिरजाघर में आ गए और गिरजाघर का टॉवर देश में कहीं भी किसी भी चीज़ से कई गुना ऊंचा था। आप अंदर गए और संरचना सोने से अलंकृत थी और वह सब कुछ कल्पनाशील था जो इसे आपकी सौंदर्य संबंधी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाता था। आपने एक गाना बजानेवालों को सुना।

गाना बजानेवालों का समूह पेशेवर था, जिसे लगभग अलौकिक रूप से, देवता की ध्वनि को प्रतिध्वनित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। क्या आप उन ग्रेगोरियन ध्वनियों को सुन सकते हैं, जो इन गुफाओं में गूँजती हैं, वे सभी ऐसे बोल रहे हैं मानो भगवान उनके साथ हैं? हम भूल गए हैं, शायद, कि हम जिस तरह से धर्म करते हैं उसके मूल में, यूरोपीय अनुभव शायद यूरोप की तुलना में बहुत पहले दोहराया गया था, और वह है सौंदर्यबोध से अनुभव करने की आवश्यकता। खैर, मुझे लगता है कि मनुष्य को सौंदर्यशास्त्र पसंद है।

मुझे लगता है कि हमें आध्यात्मिक अनुभूति पसंद है। लेकिन प्राचीन दुनिया में, धर्म को कार्यात्मक होने की आवश्यकता थी। इसलिए, मुझे यकीन नहीं है कि आपकी सुनने की शक्ति से आगे बढ़ने से पहले मैंने आज यहां कितना समय छोड़ा है, लेकिन मैं आपको जो बताना चाहता हूँ वह एक महत्वपूर्ण बात है।

धर्म को पूर्वजों द्वारा काम करने, सृजन करने, लाने के लिए डिज़ाइन किया गया था। यह बिल्कुल हमारी संस्कृति के धर्म जैसा नहीं है। तुम्हें पता है, मुझे कल तनख्वाह मिलने वाली है।

चाहे वह लिबर्टी यूनिवर्सिटी से आए या मेरे सामाजिक सुरक्षा खाते से, मुझे वेतन चेक मिलेगा। प्राचीन दुनिया में, यह उस तरह से काम नहीं करता था। उनकी पूरी दुनिया खतरे के इर्द-गिर्द घूमती थी।

कंकालों से हम जानते हैं कि औसत व्यक्ति औसत जीवनकाल तक भी नहीं पहुंच पाया होगा, हो सकता है कि वह 50 वर्ष तक भी न पहुंच पाया हो। कंकालों से हम जानते हैं कि जो बच्चे पैदा हुए उनमें से लगभग आधे पांच साल की उम्र से पहले ही मर गए। वे एक ऐसी दुनिया में रहते थे जहाँ फसल की बीमारियाँ सर्वव्यापी लगती थीं, जहाँ बहुत अधिक बारिश या पर्याप्त बारिश न होने के अर्थ में तबाही हो सकती थी, और जहाँ, उनके लिए पूरी तरह से रहस्यमय कारणों से, उनके जानवर मर सकते थे।

वे इस दुनिया में रहते थे जिसमें वे मृत्यु से, मृत्यु से केवल एक या दो दिन दूर थे। मनुष्य को यह अवधारणा पसंद नहीं है कि आप उसके बारे में कुछ नहीं कर सकते। तो उन्होंने जो किया वह धर्म के नाम पर अपने लिए बनाया, एक ऐसा साधन जिसके द्वारा उस पूरे गुस्से को नियंत्रित किया जा सकता था जिसका मैंने अभी वर्णन किया है।

तो, उन्हें अपनी दुनिया में समृद्धि या उर्वरता की आवश्यकता थी। कल्पना करने का प्रयास करें कि एक किसान होने पर कैसी भयावहता रही होगी। आप जानते हैं, आपके पास अधिक भोजन संग्रहित करने के साधन नहीं हैं।

विशेष रूप से मेसोपोटामिया में, अपने खेत में जौ या गेहूँ बोने की भयावहता की कल्पना करने का प्रयास करें, क्योंकि मिट्टी अधिक से अधिक लवणीय हो गई थी। उन्होंने अधिक से अधिक जौ बोया क्योंकि जौ गेहूँ की तुलना में अधिक कठोर होता है। यह सब लगाने की भयावहता की कल्पना करने का प्रयास करें।

आपने अपने बीज का उपयोग कर लिया है, और सीजन के बीच में, आप बाहर देखते हैं, और आप देखते हैं कि आपका पूरा खेत पीला हो गया है। या शायद आप बाहर देखते हैं, और आप देखते हैं कि आपका खेत जीवित खाया जा रहा है क्योंकि टिड्डियों का झुंड अभी-अभी आया है। अचानक, इसे कठबोली भाषा में कहें तो, आप टोस्ट हो गए हैं।

कोई खाद्य बैंक नहीं है। ऐसी कोई जगह नहीं है जहां आप डिलीवरी के लिए जा सकें। आपको जिंदा रहने के लिए कोई जादुई तरीका निकालना होगा।

खैर, प्राचीन लोग प्रतिदिन उसी के साथ रहते थे। उन्हें प्रजनन क्षमता प्राप्त करनी थी, अन्यथा वे मरने वाले थे। यदि उनके जानवर बच्चे पैदा नहीं करते, तो अंततः, जानवर मर जाएगा।

और फिर, अंततः, वे मर जायेंगे। इसलिए वे जो चाहते थे वह उन्हें उर्वरता और समृद्धि प्रदान करने के लिए धर्म को कार्यात्मक बनाने का प्रयास करना था। अब, मैं यहाँ केवल एक शब्द निकालना चाहूँगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि अभी अमेरिका में, हमारे पास समृद्धि सुसमाचार नाम की कोई चीज़ है।

हमारी संस्कृति में इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर में विश्वास आपको अमीर बना सकता है। यदि आपमें पर्याप्त विश्वास है, तो आप मर्सिडीज़ चला सकते हैं। हम यहां समृद्धि शब्द का प्रयोग इस तरह नहीं कर रहे हैं।

यहां समृद्धि का मतलब यह है कि शायद आपके जानवर दूसरों की तुलना में अधिक उत्पादन कर सकते हैं या आपके पास भरपूर फसल हो सकती है। लेकिन यह समृद्ध नहीं है। यह इस अर्थ में समृद्धि है कि आपको जीवित रहने के लिए सक्षम बनाया जा रहा है।

दूसरा, दीर्घायु का क्षेत्र। यदि मरने की औसत आयु कहीं 45 से 50 के बीच है, तो आप यह पता लगाना चाहेंगे कि अधिक समय तक कैसे जीया जाए। आखिरकार, आप यहाँ एक पड़ोसी को देख सकते हैं और यह पड़ोसी 65 वर्ष का हो सकता है।

प्राचीन मानकों के अनुसार, यह असामान्य होगा। तो, आप इसे देखते हैं, और आप कहते हैं कि यहाँ मेरा एक पड़ोसी है, देखो वह कितना बूढ़ा है। हम निश्चित रूप से यह भी नहीं जानते कि क्या उन्होंने अपने वर्षों का, कितने वर्षों का हिसाब रखा था।

लेकिन मान लीजिए कि वह जानता था कि उसका पड़ोसी 67 वर्ष का है। वह उस पर गौर कर सकता है। बेशक, वह देखेगा कि आज हम हर चीज़ के बारे में जिस तरह सोचते हैं वह वैज्ञानिक है।

हम कहेंगे, ठीक है, उसके पास अच्छे जीन हैं। या फिर उसने अपना ख्याल रखा. खैर, यह मज़ेदार नहीं है।

उसने सही खाया ; उसने व्यायाम किया, और वह पहाड़ों पर दौड़ा। देखिए, अपनी दुनिया में, उन्होंने इसे ऐसे देखा होगा जैसे देवताओं ने उन्हें इतना लंबा जीवन दिया था। तो, इसकी कल्पना करें, जबकि मेरी दुनिया में, यदि आप मेरे मानस के अंदर जाते हैं, तो उस तरह से नहीं जिस तरह से मुझे बात करनी चाहिए, बल्कि मेरे मानस के अंदर उस तरह से आते हैं जिस तरह से मैं बात करता हूँ।

इसलिए, मैं खुद को स्टिक बॉय मानता हूँ। यह मैं ही हूँ। इसलिए, जब मैं अपनी भलाई के बारे में सोचता हूँ, तो मैं वैज्ञानिक दृष्टि से सोचता हूँ।

मैं अपने बारे में सोचता हूँ कि मैंने 20 पाउंड वजन कम कर लिया है, शायद 30 पाउंड। मैं अपने बारे में सोचता हूँ कि मैं व्यायाम करता हूँ या सभी प्रकार की बुरी चीज़ें देर-सवेर जल्द ही घटित होने वाली हैं। मैं उन चीज़ों के बारे में सोचता हूँ जिनसे बचना चाहिए।

मैं सिगरेट नहीं पीता. मैं नशा नहीं करता. मैं उन चीज़ों के बारे में सोचता हूँ जिनसे मुझे बचना चाहिए।

क्या आप देख रहे हैं कि मैं अपनी भलाई के बारे में कैसे सोच रहा हूँ? मैं आधुनिक श्रेणियों में सोच रहा हूँ. जब मैं डॉक्टर के पास जाता हूँ, भले ही मेरे पास एक ईसाई डॉक्टर है, मेरी पत्नी के पास

एक ईसाई डॉक्टर है, मैं अपने डॉक्टर के पास जाकर यह नहीं कहता कि हे डॉक्टर, भगवान ने मुझे लंबी उम्र दी, इसका रहस्य क्या है? मैं अपने डॉक्टर के पास जाता हूँ, और भले ही वह एक ईसाई है, वह मुझे सही खान-पान और व्यायाम करने और अच्छे जीन के लिए प्रार्थना करने के लिए कहता है। नहीं, वह ऐसा नहीं कहता।

देखो मैं अपने भीतर कैसा सोचता हूँ? मैं पूरी तरह से अपने भीतर सोचता हूँ। मुझे वास्तव में अपने आप को इस सच्चाई की याद दिलानी होगी कि मैं आज घर के रास्ते में एक कार दुर्घटना में मर सकता हूँ। मुझे खुद को यह याद दिलाना होगा।

मुझे लगता है कि मैं नियंत्रण में हूँ। ठीक है, दोस्तों, वे जानते थे कि वे नियंत्रण में नहीं थे। उनके सोचने के तरीके में कितना अद्भुत अंतर है।

वे जानते थे कि वे नियंत्रण में नहीं हैं, और इसलिए उनकी अवधारणा 100% स्वर्ग-उन्मुख थी। सितारा याद है? वे समझ गए कि समृद्धि और दीर्घायु का रहस्य देवता थे। ठीक है? इस प्रकार, उदाहरण के लिए, मैं उनके लिए चिकित्सा को समृद्धि, अच्छी डॉक्टरी का रास्ता मानता हूँ।

वे देवता के संदर्भ में सोचते थे। आप देखिए, हम जो इंगित कर रहे हैं वह यह है कि, क्षमा करें, उन्होंने अपनी संस्कृति में समृद्धि और दीर्घायु और अच्छी चीजों को पूरी तरह से देवताओं के क्षेत्र और क्षेत्र में देखा। ठीक है? मैं बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बता सकता कि यह कितना महत्वपूर्ण है।

जब आप पुराना नियम पढ़ते हैं, तो भगवान उनसे इस प्रकार बात करते हैं: यदि आप मेरे नियमों का पालन करते हैं, तो मैं आपको अच्छी फसल दूंगा, मैं आपकी फसल को फसल की बीमारी से बचाऊंगा, और मैं बारिश भेजूंगा। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर उनसे इन श्रेणियों में बात करता है।

जब आप नए नियम पर आते हैं तो यह दिलचस्प होता है, आपके पास इसमें से बहुत कुछ नहीं है, लेकिन पुराने नियम में यह सब मौजूद है। ठीक है? तो हम जिस ओर इशारा कर रहे हैं वह यह है कि सब कुछ देवताओं से आता है, अच्छा या बुरा। तो जिस चीज़ ने उन्हें इस घटना, कारण-प्रभाव से निपटने के लिए प्रेरित किया वह है।

इसने उन्हें इस महत्वपूर्ण घटना के निष्कर्ष पर पहुंचाया कि प्रत्येक प्रभाव के लिए, एक कारण होना चाहिए। ठीक है? दूसरे शब्दों में, जबकि उन्होंने अपनी सोच में कहीं न कहीं इस अवधारणा को अपनाया होगा कि आप और मैं मौका कहे जाने वाले अवसर के बारे में जानते हैं, हम मौका शब्द का उपयोग करते हैं, उन्होंने कारण-प्रभाव के संदर्भ में सोचा होगा। तो यह उनके लिए धर्म बन गया। मुझे आशा है कि आप सभी इसका अनुसरण कर रहे हैं क्योंकि मैं आपके प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता, लेकिन इसने उन्हें धर्म को एक कार्यात्मक चीज़ के रूप में सोचने पर मजबूर कर दिया क्योंकि धर्म वांछित प्रभाव प्राप्त करने के लिए कारण को उजागर कर सकता है।

तो, वांछित प्रभाव समृद्धि, उर्वरता और दीर्घायु है। धर्म उस कारण को उजागर कर सकता है, और इसलिए यहाँ धर्म के बारे में बहुत बड़ी बात है: कारण क्या है? क्या हम, मनुष्य के रूप में, इस तरह से कार्य कर सकते हैं कि हम उस कारण का निर्माण कर सकें जो वांछित प्रभाव लाता

है? देखें कि यह इस युग में पश्चिम के धर्म से कितना भिन्न है? इसकी कार्यक्षमता सक्रिय रूप से वह लाने के लिए डिज़ाइन की गई है जो मनुष्य स्वाभाविक रूप से प्राप्त नहीं कर सकता है। तो, सभी धर्मों को इस प्रश्न का उत्तर देना है, मार्क, कारण क्या है? वह कौन सी चीज़ है जो देवताओं को हमारी ओर से कार्य करने के लिए प्रेरित करती है? देवताओं से हमारी ओर से कार्य करवाने की क्या चीज़ है? आपको याद रखना होगा कि जहां तक हम जानते हैं, प्राचीन दुनिया में हर कोई एक जैसा ही सोचता था। देवता मनमौजी थे। उन्हें आपकी परवाह नहीं थी, उन्हें इसकी परवाह नहीं थी कि आप बीमार हैं या स्वस्थ, उन्हें इसकी परवाह नहीं थी कि आप भूखे हैं या तृप्त हैं, देवता मनमौजी थे, वे ऊपर देवभूमि में रहते थे।

तो, उनकी सोच में, हम देवताओं से आपकी आवश्यकताओं के प्रति प्रतिक्रिया प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं और यह वास्तव में एक प्रश्न चिह्न था जिसके लिए कोई एक उत्तर नहीं था। हमने जो देखा है वह उनके उत्तर का एक हिस्सा है कि राजा के लिए एक पवित्र व्यक्ति इतना पवित्र होना चाहिए कि उसकी गतिविधि वांछित प्रभाव ला सके। तो हमने जो देखा है उसका एक हिस्सा वह अनोखी जगह है जो राजा के पास हो सकती थी, और अगर मैं ऐसा कह सकता हूं, तो हम इसे पुराने नियम के पत्रों में थोड़ा सा देखते हैं क्योंकि हमारे पास स्पष्ट रूप से ऐसे मामले हैं, विशेष रूप से, मुझे लगता है दाऊद का शासनकाल, जहाँ दाऊद ने परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध जनगणना की, और 100,000 लोग मर गए।

डेविड अच्छे काम करता है, और भगवान उसे अपनी दुनिया जीतने में सक्षम बनाता है। तो, राजा, यहां तक कि बाइबिल में भी, ऐसे मामले हैं जहां राजा अपने कार्यों के आधार पर अच्छा या बुरा ला सकता है। तो, हमने अब तक जो कुछ भी खर्च किया है उसका एक हिस्सा आपको यह दिखाने के साथ है कि हम एक ऐसे व्यक्ति से राजत्व के विकास को कैसे देखते हैं जो एक राज्यपाल की तरह है जो शुल्गी जैसे एक अवतारी देवता है।

क्या हो रहा है कि राजा, सदी दर सदी, उसे धर्म कैसे काम करता है, में अधिक केंद्रीकरण प्राप्त हो रहा है, और इसलिए राजा और ईश्वर के बीच यह यौन संबंध धर्म के लिए कुंजी या प्रमुख कुंजी में से एक बन जाता है। इसे पूरा करना चाहिए। शुल्गी के शासनकाल में हम यहीं पर हैं। राजा ने यह पद ग्रहण किया है।

अब और भी चीजें हैं जो मैं आपको इसके बारे में बता सकता हूं और मुझे यकीन नहीं है कि हमारे पास कितना समय बचा है, लेकिन हम आगे जिस पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं वह वह घटना है जिसे हम जादू कहेंगे। जैसा कि मैं जादू शब्द का उपयोग करता हूं, मैं एक ऐसी दुनिया में रहता हूं जहां मैं डेविड कॉपरफील्ड के बारे में सोचता हूं। मैं उन लोगों के बारे में सोचता हूं जो हुदिनी करके, ऐसे काम करके जीवन यापन करते हैं जो उन कानूनों का उल्लंघन करते प्रतीत होते हैं जिनके अनुसार हम रहते हैं।

हममें से अधिकांश लोग जानते हैं कि कुछ भी अलौकिक नहीं है। हममें से ज्यादातर लोग जानते हैं कि यह चालाकी है। यह दृश्य धोखा है, और हम इसका आनंद लेते हैं क्योंकि यह अच्छा है।

यह अच्छी तरह से किया गया है। यह इस शब्द की आधुनिक समझ है। वह प्राचीन समझ नहीं है।

प्राचीन समझ के बारे में हम जो जानते हैं वह यह है कि वे ईश्वर और मानव के अंतर्संबंध में विश्वास करते थे जब जादू हो सकता था। लेकिन याद रखें कि हम आपको जो बता रहे हैं वह कैसे है। वह कैसे काम करता है? यह उस धर्म के बारे में प्रश्न है जो प्राचीन विश्व में व्याप्त है।

यह शायद ही कभी था, मैं यह नहीं कह रहा हूँ, कभी नहीं, लेकिन यह शायद ही कभी आपके सौंदर्यपूर्ण आंतरिक अस्तित्व से बात करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। धर्म आपके लिए काम करने के लिए बनाया गया था। तो, निःसंदेह, यह आज भी हमारे आसपास है।

और मैं संभवतः अपने अगले व्याख्यान में इस पर कुछ और काम करूँगा। लेकिन फ्रायडियन शब्दों में कहें तो, एक जादुई कुलदेवता था। दूसरे शब्दों में, जादू तभी घटित हो सकता है जब इसे सही व्यक्ति द्वारा सही तरीके से किया जाए।

विद्वान इस कभी-कभी सहानुभूतिपूर्ण जादू भी कहते हैं। सहानुभूतिपूर्ण जादू एक मनोवैज्ञानिक घटना है जहां लोग वास्तव में विश्वास करते हैं कि आप जो चाहते हैं उसका एक प्रतिनिधि जब जादुई रूप से संपन्न होता है तो वह जादुई चीजें घटित कर सकता है। हमारे दर्शकों में से किसने काले जादू जादू टोना के बारे में कभी नहीं सुना है? इस प्रकार, उदाहरण के लिए, आप जो चाहते हैं उसकी एक छवि बनाते हैं, जो कई बार हानिकारक होती है, और फिर आप छवि पर जादुई शब्द कहते हैं, और फिर आप छवि को नष्ट कर देते हैं।

हो सकता है कि आप इसमें पिन चिपका दें या हो सकता है कि आप इसे कुचल दें या कुछ और। यह जादुई रूप से वांछित प्रभाव पैदा करता है। हम इसे अफ्रीका और हैती जैसे सभी स्थानों पर देखते हैं, जहां इस तरह की घटना आज भी मौजूद है।

लेकिन मैं आपको बता सकता हूँ कि यह पूरे प्राचीन निकट पूर्व में भी जाना जाता था। धर्म को एक जादुई कुलदेवता की आवश्यकता थी और मानव इतिहास में हम अभी इसी स्थिति में हैं। राजा जादुई कुलदेवता है।

वह जीवित छवि हैं जो अपने लोगों के लिए समृद्धि ला सकते हैं। इस प्रकार के केंद्रीकरण के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है क्योंकि किसी न किसी समय, यह स्पष्ट हो जाएगा कि राजा काम नहीं कर रहा है। प्राचीन, चाहे वे कुछ भी हों, मूर्ख नहीं थे।

वे चीजों को स्पष्ट रूप से पढ़ सकते थे और इसलिए जब तक राजा अपने लोगों को यह विश्वास दिला सकता था कि वह इस जादुई एजेंसी के रूप में प्रभावी है, तब तक वे उनके पास थे। लेकिन जब यह स्पष्ट हो गया कि यह काम नहीं कर रहा है और वे समृद्धि का अनुभव नहीं कर रहे हैं इत्यादि, तब राजा ने मुद्रा खो दी। इस प्रकार, हमारे पास इस समय प्राचीन विश्व के धर्म में राजा का अद्वितीय स्थान है, लेकिन यह इस समय जीवित प्रत्येक व्यक्ति की विचार दुनिया में एक खिड़की भी है।

जादुई तरीके से, आप देवताओं को अपने पास ला सकते हैं, और आप एक टोटेम की एजेंसी के माध्यम से उनके पास जा सकते हैं। लेकिन मैं इस बात पर अधिक जोर नहीं दे सकता कि यह

कार्यात्मक था, जहां तक मैं देख सकता हूं, बिल्कुल भी नहीं, जिस तरह से हम आज अपनी धार्मिक दुनिया में इस तरह की चीजें करते हैं। यह... तो, हर मामले में जब कोई घटना होती है, तो उसका कोई कारण होना चाहिए।

और इसलिए, विचार यह पता लगाने का प्रयास करना था कि फिर इसका कारण क्या है। अगर यहाँ मेरे पड़ोसी की फसल बहुत अच्छी हुई और मेरी नहीं हुई, तो इसका एक कारण है। मुझे यह पता लगाना होगा कि वह क्या है जो मैं ला सकता हूँ।

तो फिर इसके मूल में बुतपरस्ती क्या है, और शायद यह आखिरी विचार है जिसे हम आज या कम से कम इस व्याख्यान में सामने लाएंगे, वह यह है कि मनुष्य नियंत्रण में है। बाइबल जो स्पष्ट करती है वह यह है कि ईश्वर नियंत्रण में है। यदि हमारे साथ जो हुआ है वह अवांछनीय है या बुरा प्रतीत होता है तो इससे हमें कुछ परेशान करने वाले निष्कर्ष मिल सकते हैं।

लेकिन ईश्वर जो करता है वह हमसे कहता है, वास्तव में, मैं कारण का माध्यम हूँ। बुतपरस्ती मूलतः यह कहती है कि आप, एक इंसान के रूप में, देवताओं के नियंत्रण में हैं। मेरे लिए यह सचमुच बहुत गहरा है।

बुतपरस्ती का कहना है कि आप देवताओं के नियंत्रण में हैं क्योंकि आप जो चाहते हैं उसे करने के लिए उन्हें हेरफेर कर सकते हैं। आपको बस यह जानना है कि भगवान क्या चाहता है। भगवान को कैसे प्रसन्न किया जा सकता है? भगवान को कैसे खरीदा जा सकता है? आप भगवान को कैसे क्रोधित कर सकते हैं? क्या... आप जानते हैं... तो, बुतपरस्ती में, हमारे पास नियंत्रण, हेरफेर और जादू जैसे कीवर्ड हैं।

और इसलिए, बुतपरस्ती में, बुतपरस्ती के विचार में, आप देवताओं को हेरफेर कर सकते हैं और इसलिए परिणाम को नियंत्रित कर सकते हैं। ईसाई विचारधारा में, हम जो देखते हैं वह यह है कि ईश्वर सभी अच्छाइयों का स्रोत है और केवल आज्ञाकारिता और विश्वास से ही हम उसका आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। तो, मुझे लगता है, यह उन मुख्य मुद्दों में से एक है जिनसे हम बुतपरस्त धर्म में निपटते हैं।

जैसे ही हम अपना अगला व्याख्यान शुरू करेंगे, हम इस विषय क्षेत्र का तीन मिनट का वार्म-अप करेंगे और फिर कुछ अन्य उदाहरणों पर आगे बढ़ेंगे कि यह समकालीन संस्कृतियों और विचारों में कैसे काम करता है। लेकिन शायद वह इस व्याख्यान को समाप्त करने के लिए एक अच्छी जगह लगती है। आपके ध्यान के लिए बहुत बहुत धन्यवाद।

यह पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर अपने शिक्षण में डॉ. डॉन फाउलर हैं। यह सत्र 5 है, बुतपरस्ती का धार्मिक दर्शन।